मनोवृत्ति का विकास तथा निर्माण
(Development and formation of Attitudes)

मनोवृत्ति एक सीखी गई प्रवृत्ति है। इसके विकास में बहुत से कारकों का प्रभाव पड़ता है। समाज मनोवैज्ञानिकों ने कुछ महत्वपूर्ण कारकों की पहचान की है। जिनसे मनोवृत्ति का निर्माण होता है। जो निम्नांकित हैं —

* **आवश्यकता पूर्ति** — साधारणत: जिस व्यक्ति, वस्तु तथा घटना से हमारे लक्ष्य की प्राप्ति होती है एवं आवश्यकता की पूर्ति होती है, उसके प्रति व्यक्ति की अनुकूल मनोवृत्ति विकसित होती है। वहीं यदि किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के कारण व्यक्ति के लक्ष्य प्राप्ति में बाधा उत्पन्न होती है या आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाती है, तो इससे व्यक्ति में उसके प्रति प्रतिकूल मनोवृत्ति का निर्माण हो जाता है।

* **सूचना का माध्यम** — आधुनिक समय में व्यक्ति को भिन्न भिन्न माध्यमों जैसे — रेडियो, टेलीविज़न, अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, ~~और~~ सोशल मिडिया, इंटरनेट, मित्र-बन्धु, माता-पिता, आस-पड़ोस आदि से सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। इनसे प्राप्त सूचनाओं के

NOTES
2013
Scanned with CamScanner

आधार पर व्यक्ति अपनी मनोवृत्ति विकसित करता है। अनुसंधानों से यह स्पष्ट होता है कि सभी तरह की सूचनाओं का प्रभाव मनोवृत्ति के विकास में समान रूप से नहीं पड़ता है। यदि सूचना प्राप्ति का स्रोत अधिक विश्वसनीय होता है तो यह मनोवृत्ति निर्माण में अधिक सहायक होती है।

*** सामाजिक सीखना** — सामाजिक सीखना का प्रभाव भी मनोवृत्ति के विकास में काफी होता है। समाज मनोवैज्ञानिकों ने बतलाया है कि मनोवृत्ति के विकास में सीखने के तीन तरह की प्रक्रियाओं का महत्वपूर्ण स्थान है।

- क्लासिकी अनुबंधन (Classical conditioning)
- साधनात्मक अनुबंधन (Instrumental Conditioning)
- प्रेक्षणात्मक सीखना (Observational learning)

• क्लासिकी अनुबंधन — क्लासिकी अनुबंधन विधि के अनुसार जब किसी तटस्थ उद्दीपक को अनुक्रिया उत्पन्न करने वाले उद्दीपक के साथ बार-बार उपस्थित किया जाता है तो ऐसी स्थिति में व्यक्ति तटस्थ उद्दीपक के द्वारा भी उसी प्रकार की अनुक्रिया करना सीख जाता है। समाज मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति भी इस नियम के द्वारा अनेक नई-नई मनोवृत्तियों को सीख जाता है। जैसे- जब बच्चा अपने पिता को किसी खास वर्ग या जाति के प्रति यह कहते सुनता है कि वे गंदे या बुरे होते हैं तो वह धीरे-धीरे उस वर्ग या जाति के लोगों के प्रति वैसी ही मनोवृत्ति विकसित कर लेता है।

• साधनात्मक अनुबंधन — सीखने के इस नियम के अनुसार जिस अनुक्रिया के बाद व्यक्ति को पुरस्कार मिलता है उसे वह जल्दी सीख लेता है तथा जिस अनुक्रिया के बाद उसे दंड मिलता है, उसे वह दोहराना नहीं चाहता है। समाज मनोवैज्ञानिकों का यह मानना है कि बच्चों में ठीक- वैसी ही मनोवृत्ति जल्द विकसित हो जाती है, जैसा उनके माता-पिता की होती है। इसका कारण यह है कि

Scanned with CamScanner

माता-पिता के समान मनोवृत्ति दिखलाने पर उन्हें पुरस्कार दिया जाता है या उसके व्यवहार की प्रशंसा की जाती है, वहीं दूसरी ओर विपरीत मनोवृत्ति दिखलाने पर उन्हें डाँट-फटकार या शारीरिक दण्ड दिया जाता है, जिससे वे इस प्रकार की मनोवृत्ति नहीं विकसित करते हैं।

• **प्रेक्षणात्मक सीखना** — प्रेक्षणात्मक सीखना में व्यक्ति दूसरों की क्रियाओं एवं उसके परिणामों को देखकर वैसी ही अनुक्रिया करना सीख जाता है। समाज मनोवैज्ञानिकों का मत है कि बच्चे प्रायः अपने माता-पिता द्वारा दिखलाये गये मनोवृत्ति को देखकर वैसी ही मनोवृत्ति विकसित कर लेते हैं और उनके व्यवहार के अनुरूप व्यवहार करना सीख लेते हैं।

* **समूह संबंधन (Group Affiliation)** — समूह संबंधन से तात्पर्य व्यक्ति का किसी खास समूह से जुड़ना या संबंध स्थापित करने से होता है। जब व्यक्ति अपना संबंध किसी विशेष समूह से जोड़ता है, तो वह उस समूह के मूल्यों, मानदण्डों, विश्वासों, तौर-तरीकों को भी स्वीकार करता है। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति समूह के मूल्यों एवं मानदण्डों के अनुरूप अपनी मनोवृत्ति को भी विकसित करता है ताकि समूह के अन्य सदस्य भी इनकी सदस्यता को स्वीकार करें।

* **सांस्कृतिक कारक** — प्रत्येक व्यक्ति का विकास एवं पालन-पोषण किसी-न-किसी संस्कृति में ही होता है। प्रत्येक संस्कृति का अपना मूल्य, परम्पराएँ, मानदण्ड, धर्म आदि होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का समाजीकरण इन्हीं सांस्कृतिक कारकों द्वारा अधिक प्रभावित होता है। इसलिए व्यक्ति की मनोवृत्ति भी इन्हीं सांस्कृतिक प्रारूपों के अनुसार विकसित होती है। जैसे- मृत्यु के बाद व्यक्ति का अंतिम संस्कार किस ढंग से किया जाये इसमें हिंदू एवं मुस्लिम संस्कृति में पले लोगों की मनोवृत्तियों में अन्तर पाया जाता है।

Scanned with CamScanner

* व्यक्तित्व कारक — मनोवृत्ति के विकास एवं निर्माण में व्यक्तित्व शीलगुणों का भी बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति उन मनोवृत्तियों को पहले सीख लेता है, जो उसके व्यक्तित्व शीलगुणों के अनुकूल होते हैं। समाज मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न तरह के मनोवृत्तियाँ जैसे — धार्मिक मनोवृत्ति, राजनैतिक मनोवृत्ति तथा संजातिकेन्द्रवाद (Ethnocentricism) में व्यक्तित्व कारकों के महत्व का काफी अध्ययन किया है।

* रूढ़िकृतियाँ (Stereotypes) — रूढ़िकृतियाँ से तात्पर्य किसी वर्ग या समुदाय के लोगों के बारे में स्थापित सामान्य मान्यताओं तथा सामान्यीकरण से होता है। जैसे — हमारे समाज में महिलाओं के प्रति एक रूढ़िकृति है कि वे पुरुषों की अपेक्षा अधिक धार्मिक एवं परामर्शग्राही होती हैं। फलस्वरूप महिलाओं के प्रति एक विशेष प्रकार की मनोवृत्ति का निर्माण सामान्य लोगों में हो जाता है। उसी तरह हिंदू समाज में यह रूढ़िकृति है कि गाय उनकी माता है। फलस्वरूप गाय के प्रति हिंदुओं की मनोवृत्ति अधिक अनुकूल होती है। इससे स्पष्ट होता है कि रूढ़िकृतियों के द्वारा भी व्यक्ति के मनोवृत्ति का निर्माण होता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि मनोवृत्ति के विकास एवं निर्माण को बहुत से कारक प्रभावित करते हैं।

Scanned with CamScanner